

THIS IS A SAMPLE PDF

CARDINAL

चुन-मुन बालगीत और कहानियाँ ३



54121381948

 **CARDINAL**
BOOKS
Road To Success

THIS IS A SAMPLE PDF

THIS IS A SAMPLE PDF

चुन-मुन बालगीत और कहानियाँ

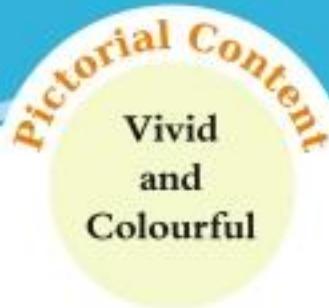
© SHETH Publishing House

Concepts & Designs



cardinaldesignsstudio1@gmail.com

THIS IS A SAMPLE PDF



The success of every beginning is evaluated by the achievement of its goals. Our goal in this series of books is to lay a strong foundation for the basic education of preschoolers. The content is carefully designed with a complete understanding of the students' potential aptitude and raising it gently to higher levels.



This Pre-Primary series conforms to the vision of the National Curriculum Framework 2005 and meets the requirements of CBSE, ICSE and major state education boards.

The series is specifically planned for the overall development of the students' perception of his/her immediate environment, whether it is related to words, numbers, people, things or the wonderful gifts of nature. These books are not only informative but are pleasantly interactive as they are adequately interspersed with interesting activities. The pictorial content is vividly colourful to engage the students' attention and expand his/her imagination. These books aim to lead the students on an interesting journey of wonder, discovery and comprehension of our beautiful world. Dedicated to making the teaching and learning process into an enjoyable experience.



© CARDINAL BOOKS™

All rights are reserved. No part of this publication may be copied, adapted, reproduced, stored in or introduced into a retrieval system transmitted in any form by any means without prior written permission of the publisher.

New Edition

• • • • अनुक्रमणिका • • •

बालगीत

१. प्रार्थना	४
२. दूधब्रश	५
३. बिल्ली की अंगड़ाई	६
४. सुबह हो गई	७
५. दिशाएँ	८
६. झरना	९
७. तारे	१०
८. बादल	११
९. नदिया	१२
१०. अपनी-अपनी बोली	१३
११. नंदलाल	१४
१२. तोता	१५
१३. सब्जीवाला	१६
१४. फूल	१७
१५. मेरा परिवार	१८
१६. अच्छे काम	१९
१७. बंदरिया की ससुराल	२०

१८. अगर न होता सूरज	२१
१९. नदिया मेरे गाँव की	२२
२०. गाँधीजी के बंदर तीन	२३
२१. तितली	२४
२२. हम बीर सिपाही	२५
२३. पेड़	२६
२४. ठीक समय	२७
२५. चींटी रानी	२८
२६. मेरे भैया	२९
२७. हमसे हँसना सीखो	३०
२८. होली	३१
२९. चंदा मामा	३२
३०. घड़ी	३३

कहानियाँ

१. लोमड़ी और बगुला	३४
२. बीमार शेर	३६
३. बारहसिंगा	३८
४. दो बकरियाँ	४०

बालगीत

१. प्रार्थना

विनती हमारी सुनो भगवान्,
हम सब बच्चे हैं नादान।
हम सबको दो यह वरदान,
पढ़-लिखकर हम बनें महान।
करें बड़ों का सदा सम्मान,
बने हमारी यही पहचान।
नित्य करें हम ऐसे काम,
जिनसे बढ़े भारत की शान।
सदा सभी का हित चाहें,
देश पर अपने हम मिट जाएँ।
हम सब बच्चे हैं नादान,
विनती हमारी सुनो भगवान।



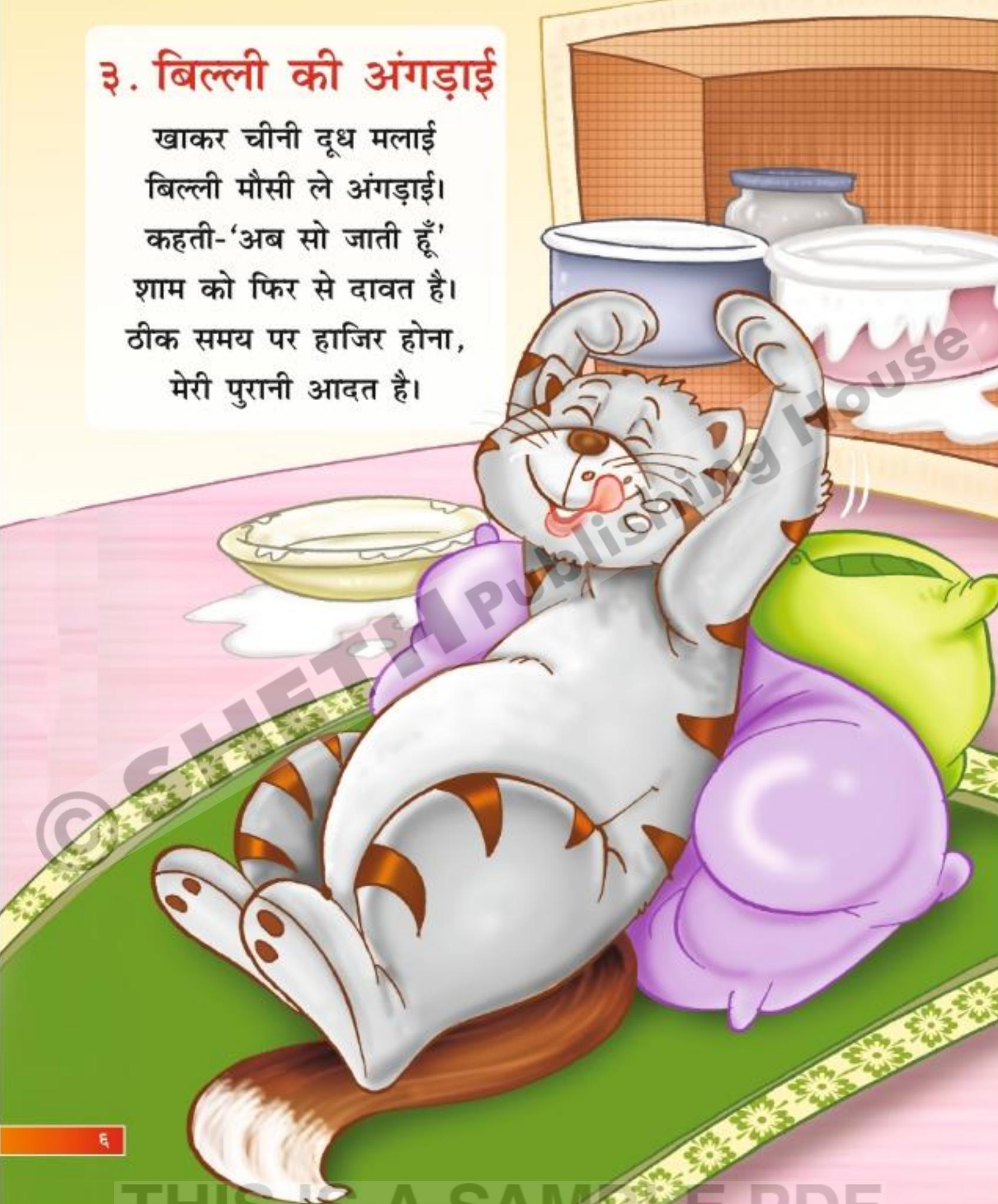
२. टूथब्रश

ये मेरा टूथब्रश,
ये मेरी टूथपेस्ट,
सुबह जब मैं उठूँ,
दाँत अपने धिसूँ।
ऊपर धिसूँ, नीचे धिसूँ,
धिसूँ बार-बार।
दाँत मेरे स्वच्छ बने
लगे चमकदार।



३. बिल्ली की अंगड़ाई

खाकर चीनी दूध मलाई
बिल्ली मौसी ले अंगड़ाई।
कहती-‘अब सो जाती हूँ’
शाम को फिर से दावत है।
ठीक समय पर हाजिर होना,
मेरी पुरानी आदत है।



४. सुबह हो गई

काला कौआ छत पर बैठा,
कैसा शोर मचाता है।
काँव-काँव करके वह तो,
मेरी नींद भगाता है!
इधर ये मुर्गा कुकड़-कूँ कर,
मुझको यह समझाता है,
सुबह हो गई, अब तो उठ जा,
क्यों आलस तुझको आता है।



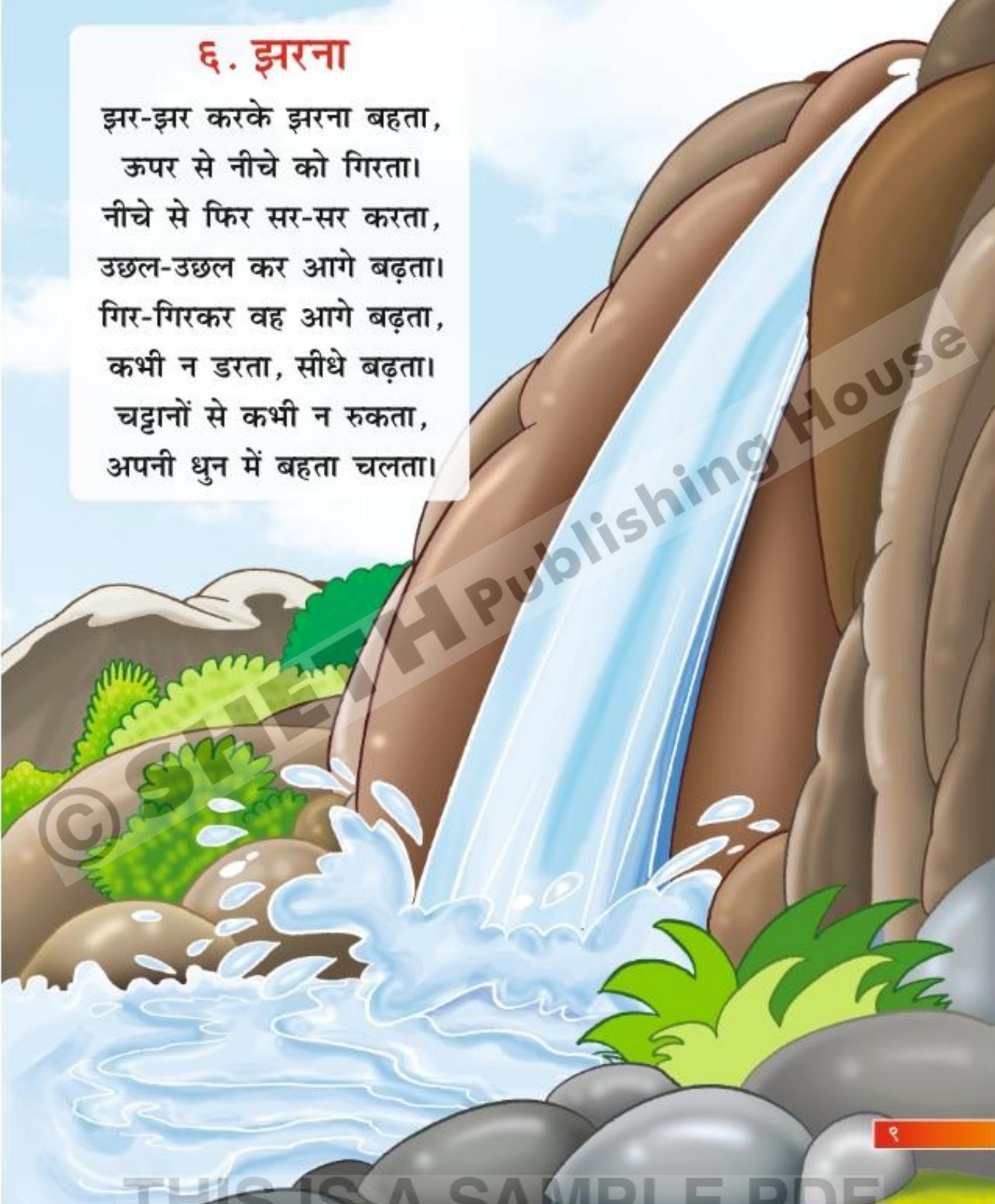
५. दिशाएँ

उगता सूरज जिधर सामने,
उधर खड़े हो मुँह करके तुम।
ठीक सामने पूरब दिशा है,
और पीठ पीछे है पश्चिम।
बाईं ओर दिशा उत्तर की,
दाईं ओर तुम्हारे दक्षिण
चार दिशाएँ होती हैं यों,
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।



६. झरना

झर-झर करके झरना बहता,
ऊपर से नीचे को गिरता।
नीचे से फिर सर-सर करता,
उछल-उछल कर आगे बढ़ता।
गिर-गिरकर वह आगे बढ़ता,
कभी न डरता, सीधे बढ़ता।
चट्टानों से कभी न रुकता,
अपनी धून में बहता चलता।



७. तारे

टिम-टिम करते आसमान में,
कितने सारे तारे हैं।
इनको देखो तो लगता है,
जग में सबसे न्यारे हैं।
झिलमिल-झिलमिल से चमकीले,
ये तो प्यारे-प्यारे हैं।
इनकी गिनती करूँ मैं कैसे,
ये तो कितने सारे हैं।



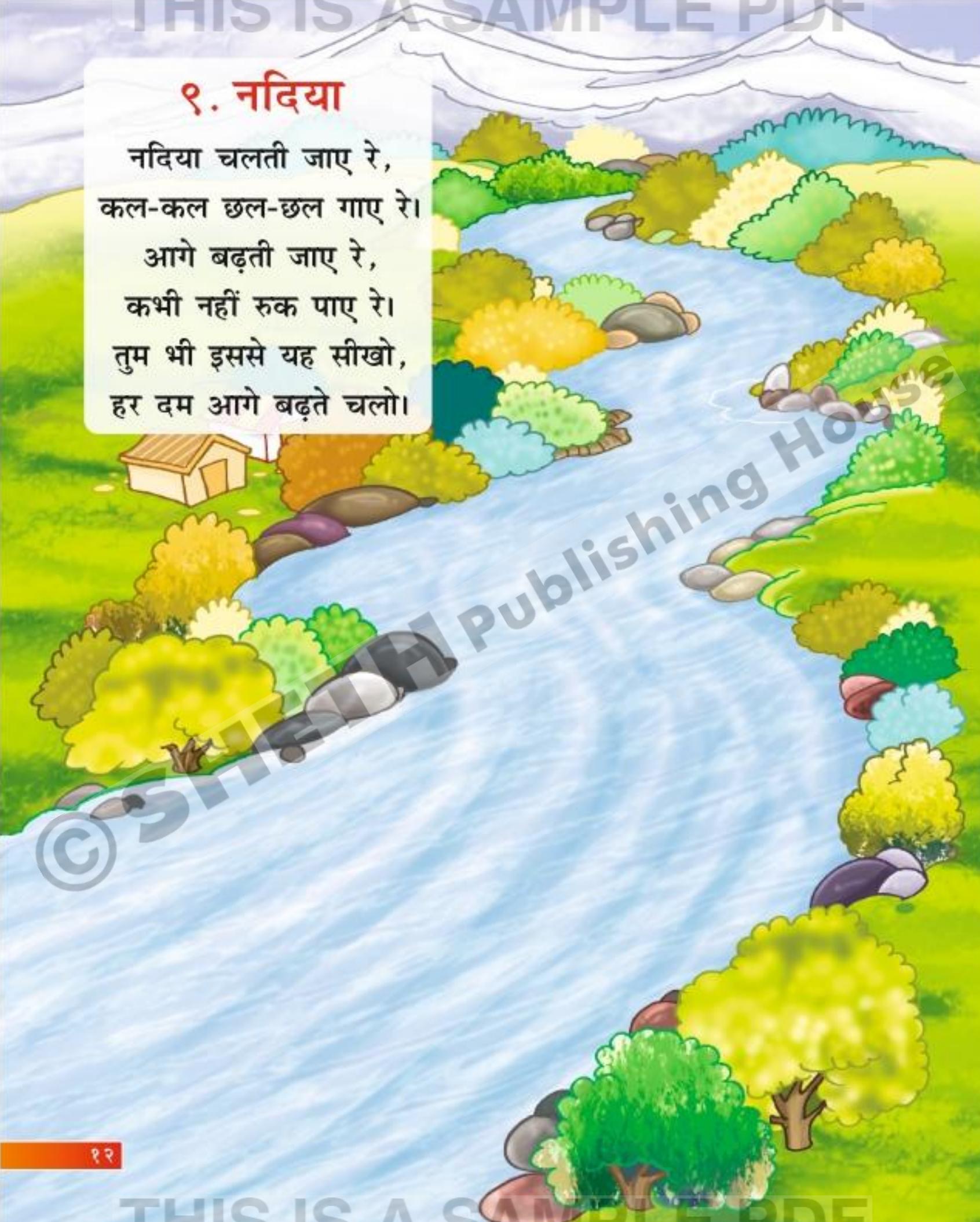
८. बादल

काले बादल आए हैं,
आसमान पर छाए हैं।
ये पानी बरसाएँगे,
सबका मन हर्षाएँगे।
रिमझिम करके बरसेंगे,
ताल-तलैया सरसेंगे।



९. नदिया

नदिया चलती जाए रे,
कल-कल छल-छल गाए रे।
आगे बढ़ती जाए रे,
कभी नहीं रुक पाए रे।
तुम भी इससे यह सीखो,
हर दम आगे बढ़ते चलो।



१०. अपनी-अपनी बोली

बिल्ली करती म्याऊँ-म्याऊँ,

भौं-भौं बोले कुत्ता।

कुकड़ूँ-कूँ, कुकड़ूँ-कूँ,

बाँग सुनाता मुर्गा।

खी-खी खी-खी बंदर करता,

हीं-हीं हीं-हीं करता घोड़ा।

चीं-चीं चीं-चीं चिड़िया बोले,

काँव-काँव करे कौआ।

गुटर गूँ-गुटर गूँ करे कबूतर,

मेंढक बोले टर-टर।



११. नंदलाल

नटखट तेरा लाल यशोदा,
नटखट तेरा लाल।
ग्वाल-बाल संग में ले आता,
चुपके से घर में घुस जाता।
मक्खन खाता, दही उड़ाता,
कर देता बेहाल।
नटखट तेरा लाल यशोदा,
नटखट तेरा लाल।



१२. तोता

तोता हूँ मैं तोता हूँ,
हरे रंग का तोता हूँ।
लाल चोंच वाला हूँ,
लंबी पूँछ वाला हूँ।
बागों में मैं जाता हूँ,
मीठे फल मैं खाता हूँ।
माली से डर जाता हूँ,
पत्तों में छिप जाता हूँ।



१३. सब्जीवाला

मम्मी जल्दी बाहर आओ,
सब्जीवाला आया है।
आलू, मटर, भिंडी, पालक,
लौकी, शलगम लाया है।
गोल-गोल है लाल टमाटर,
बैंगन मोटे-मोटे हैं।
गोभी खिली फूल-सी है,
पर टिंडे छोटे-छोटे हैं।
लाया लंबी-लंबी मूली,
गाजर थोड़ी छोटी है।
शिमला मिर्च को देखो,
गोल हरी और मोटी है।



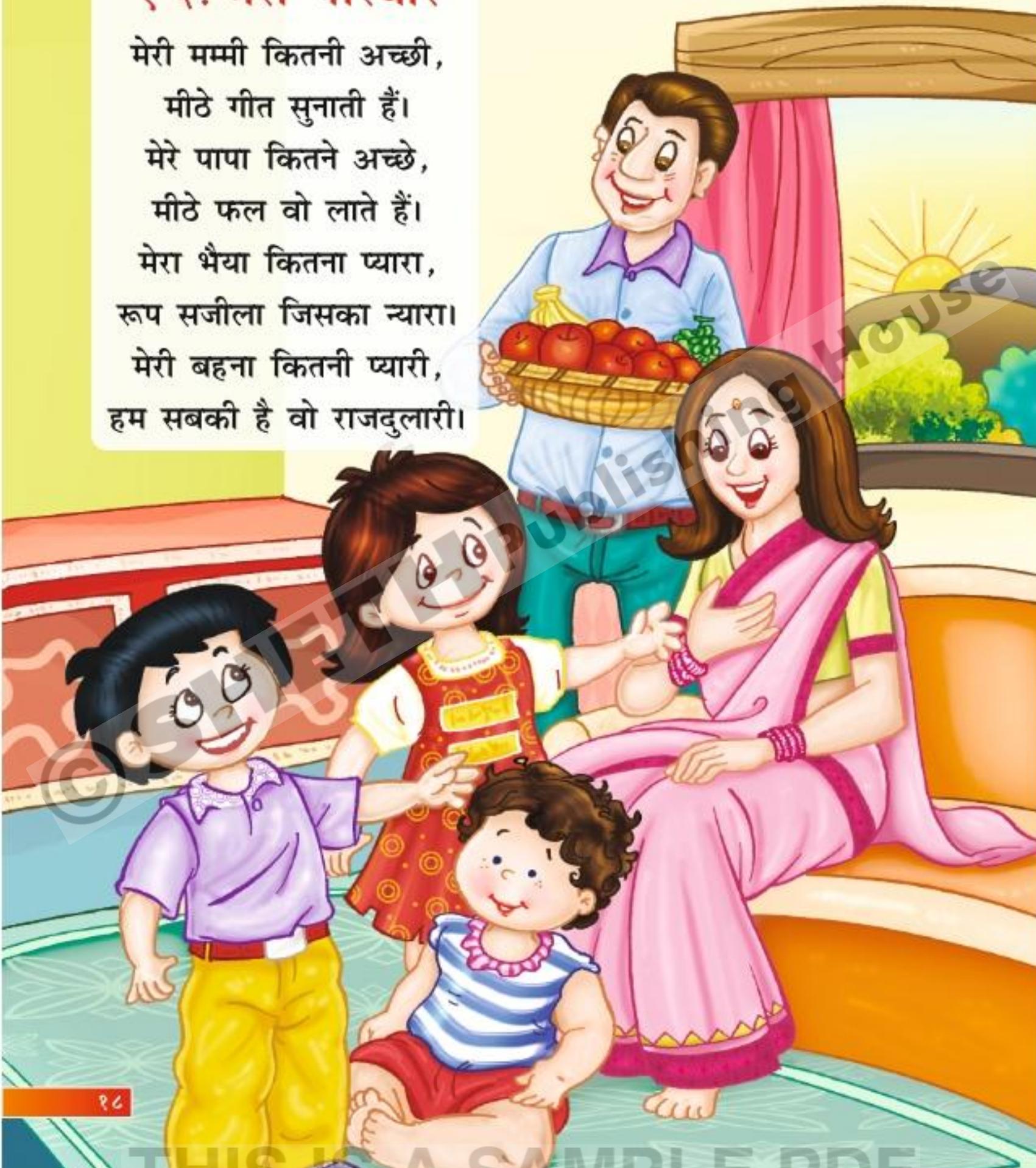
१४. फूल

देखो फूल हैं कितने सुंदर,
सबके मन को भाते हैं।
थोड़े से जीवन में अपने,
सबका मन बहलाते हैं।
लगते हैं जब पौधों पर ये,
सबसे प्यारे लगते हैं।
इन्हें न तोड़ो कभी भी भैया,
ये भी रोने लगते हैं।



१५. मेरा परिवार

मेरी मम्मी कितनी अच्छी,
मीठे गीत सुनाती हैं।
मेरे पापा कितने अच्छे,
मीठे फल वो लाते हैं।
मेरा भैया कितना प्यारा,
रूप सजीला जिसका न्यारा।
मेरी बहना कितनी प्यारी,
हम सबकी है वो राजदुलारी।



१६. अच्छे काम

करो हमेशा अच्छे काम,
दुनिया में पाओगे नाम।
बात सदा बड़ों की मानो,
सही गलत को ठीक पहचानो।
पशु-पक्षियों का रखना ध्यान,
उन्हें न हो कोई नुकसान।
करो हमेशा अच्छे काम,
दुनिया में पाओगे नाम।
अपना काम करो खुद ही,
मदद करो ज़रूरतमंदों की।
करो हमेशा अच्छे काम,
दुनिया में पाओगे नाम।



१७. बंदरिया की ससुराल

नई दुल्हनिया बनी बंदरिया,
बंदर जी ने पूछे हाल।

नाक चढ़ा कर कहे बंदरिया,
बड़ी बेढ़ंगी है ससुराल।
सारी रात तो मच्छर काटे,
न ही तकिया मिला नरम।

सुबह-सुबह तक सो नहीं पाई,
न ही मिली मुझे चाय गरम।
अभी लो! कह कर भागा बंदर,
लाया कॉफी, टोस्ट, कुरकुरे,
तब जाकर मुस्काई बंदरिया,
पी ली कॉफी, छोड़े नखरे।



१८. अगर न होता सूरज

अगर न होता सूरज, दिन को

सोने-सा चमकाता कौन?

अगर न होता चाँद, रात में

हमको दिशा दिखाता कौन?

अगर न होते पर्वत, मीठे

झरने भला बहाता कौन?

अगर न होती निर्मल नदियाँ,

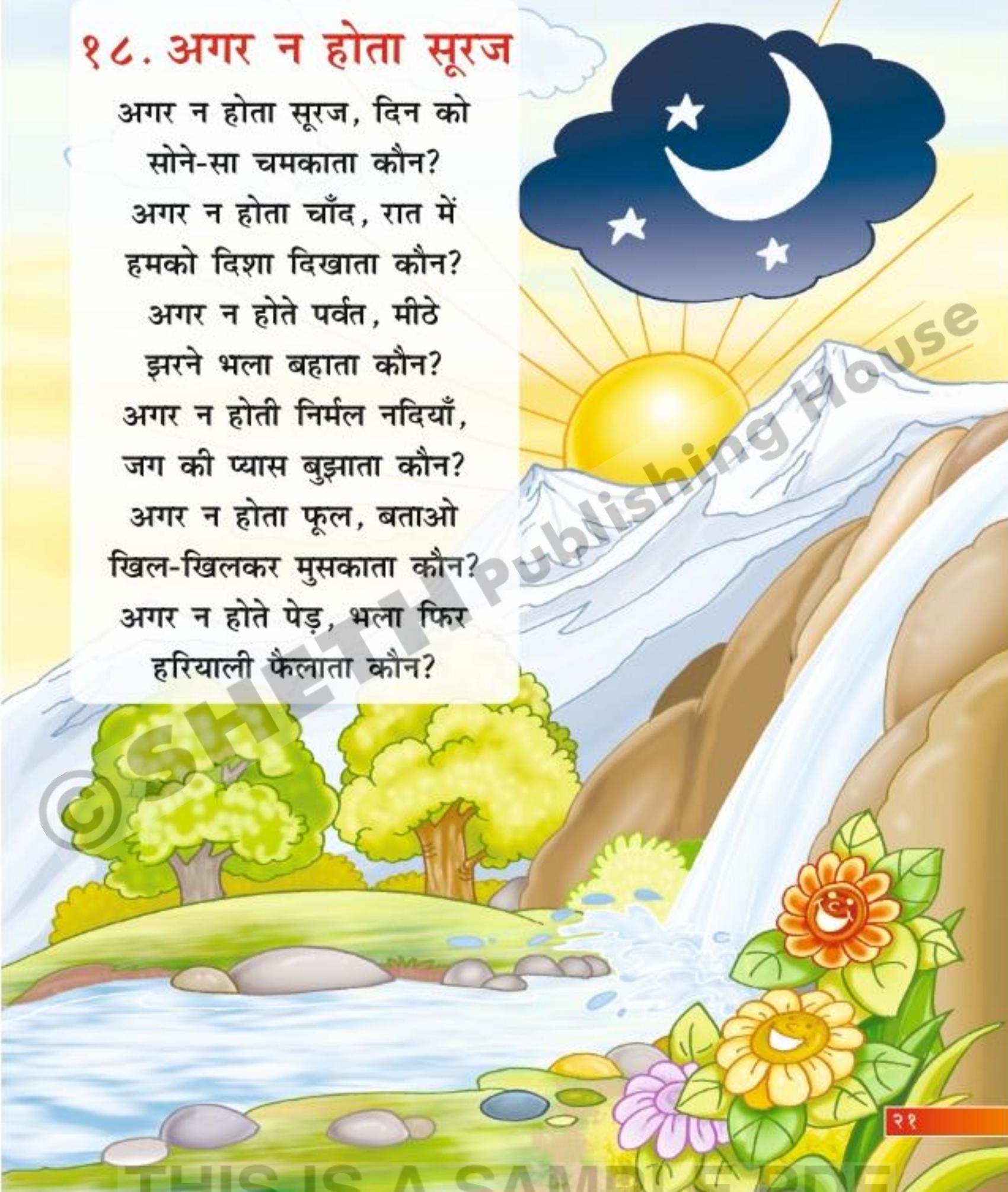
जग की प्यास बुझाता कौन?

अगर न होता फूल, बताओ

खिल-खिलकर मुसकाता कौन?

अगर न होते पेड़, भला फिर

हरियाली फैलाता कौन?



१९. नदिया मेरे गाँव की

कितनी प्यारी, जग से न्यारी,
नदिया मेरे गाँव की।
शीतल हवा नदी से आती,
लगती प्यारी छाँव-सी।
नदी किनारे गाँव बसा है,
लगी घनी अमराई।
नदिया की शोभा बढ़ती है,
जब बहती पुरवाई।



२०. गाँधीजी के बंदर तीन

गाँधीजी के बंदर तीन,
सीख हमें देते अनमोल।
बुरा दिखे तो दो मत ध्यान,
बुरी बात पर दो मत कान,
कभी न बोलो कड़वे बोल।
याद रखोगे यदि यह बात,
कभी नहीं खाओगे मात,
न कभी होगे डाँवाडोल।



२१. तितली

तितली तितली सुंदर तितली,
सब के मन को भाती तितली।
रंग-बिरंगी छैल-छबीली,
फूलों पर मंडराती तितली।
फूलों से कोमल यह तितली,
परी लोक से आती तितली।
बच्चे करते हैं बड़ी कोशिश,
फिर भी हाथ न आती तितली।
दिनभर चक्कर खूब लगाती,
सुस्ताने का नाम न लेती।
सबको भाती, खूब लुभाती,
एक पल रुक कर फिर उड़ जाती।



२२. हम वीर सिपाही

हम भारत के वीर सिपाही
हम बढ़ते ही जाएँगे,
बाधा चाहे जो भी आए,
कभी न हम घबराएँगे,
हम बस बढ़ते जाएँगे।
नहें-नहें कदम हमारे
ऊँचे उठते जाएँगे,
लिए हाथ में हाथ सभी के
अपनी मंजिल पाएँगे,
हम बस बढ़ते जाएँगे।



२३. पेड़

पेड़ बहुत ही लगते प्यारे,
 मैं तो पेड़ लगाऊँगी।
 पानी देकर रोज उन्हें मैं,
 लंबा खूब बनाऊँगी।
 तेज धूप में छाया देते,
 चिड़ियाँ आतीं उन पर रहने,
 दाना उन्हें खिलाऊँगी।
 पेड़ पर हैं फूल सुहाने,
 उनको देख लगे लहराने।
 मीठे फल हैं उनमें लगते,
 तोड़-तोड़ कर खाऊँगी।



२४. ठीक समय

ठीक समय पर, नित उठ जाओ।
ठीक समय पर, चलो नहाओ।
ठीक समय पर, खाना खाओ।
ठीक समय पर, पढ़ने जाओ।
ठीक समय पर, मौज उड़ाओ।
ठीक समय पर, गाना गाओ।
ठीक समय पर, सब कर पाओ।
तो तुम बहुत, बड़े कहलाओ।



२५. चींटी रानी

चींटी रानी, चींटी रानी,
भेद छुपाए, बड़ी सयानी।
फिरती रहती किधर-किधर हो,
कभी इधर हो, कभी उधर हो।
कब जगती हो, कब सोती हो?
कब हँसती हो, कब रोती हो?
करती रहती हो मनमानी,
चींटी रानी बड़ी सयानी।
हम सो कर कुछ समय गँवाते,
कहीं न जाते कहीं न आते।
तुम घंटों चलती रहती हो,
जैसे कभी नहीं थकती हो।



२६. मेरे भैया

नटखट मेरे छोटे भैया,
काम क्यों ऐसा करते हो।
रंग-बिरंगी पेंसिल लेकर,
घर को गंदा करते हो।
पापा की नई डायरी के
टुकड़े-टुकड़े तुम कर देते,
मम्मी का तुम पाउडर लेकर,
सारे तन पर मल लेते।
डाँट पड़े जो तुमको भैया,
काम न ऐसे किया करो।
नटखट मेरे छोटे भैया,
शैतानी अब छोड़ भी दो।



२७. हमसे हँसना सीखो

मस्त झूमते फूल कह रहे,
हमसे हँसना सीखो।
तड़के ही उठ हम मुस्काते,
गुम-सुम रहना छोड़ो।
हर मौसम में, काँटों में भी,
सब कुछ सहना सीखो।
बीत गया जो भूलो उसको,
आज अभी की सोचो।
आगे की भी चिंता छोड़ो,
खूब महकना सीखो।
मन खुश रखो बाँटो खुशियाँ,
गीत खुशी के गाओ।
भले ही तुम नहे बच्चे हो,
फिर भी फूल कहलाओ।



२८. होली

बच्चों ने है धूम मचाई,
होली आई! होली आई!
कहीं है रंग गुलाबी, नीला,
कहीं है लाल, केसरी, पीला।
श्याम बना है रंग-रंगीला,
दूँढ़ रही है उसको शीला।
ललिता ने आवाज लगाई,
होली आई! होली आई!
ले पिचकारी धूम मचाती,
निकल पड़ी बच्चों की टोली।
रंग लगाए, हँसे-हँसाए
होली आई! होली आई!



२९. चंदा मामा

आसमान में निकले तारे,
चंदा मामा कितने प्यारे।
सबके मन को बहलाते हैं,
नई चाँदनी छिटकाते हैं।
देखो इनकी शान निराली,
सूरत कितनी भोली-भाली।
रोज सबेरे छिप जाते हैं,
जैसे हमसे शरमाते हैं।
आओ चंदा मामा आओ,
अपने घर की बात सुनाओ।



३०. घड़ी

टिक-टिक, टिक-टिक करती चलती,
सही समय बतलाती है,
कभी न थकना तुम जीवन में,
हमको यह सिखलाती है।

टिक-टिक, टिक-टिक करती चलती,
सही समय बतलाती है,
कभी न रुकना अपने पथ में,
आगे बढ़ना सिखलाती है।



कहानियाँ

१. लोमड़ी और बगुला

एक लोमड़ी और एक बगुला अच्छे दोस्त थे। एक दिन लोमड़ी ने बगुले को अपने घर खाने पर बुलाया। लोमड़ी ने बगुले का मनपंसद सूप थाली में परोसा। बगुले की चोच लंबी थी। वह थाली से सूप नहीं पी पाया पर लोमड़ी मजे से सूप पी गई। बगुले को लोमड़ी की यह हरकत बहुत बुरी लगी।



दूसरे दिन बगुले ने लोमड़ी को अपने घर खाने पर बुलाया। बगुले ने भी लोमड़ी के लिए उसका मनपंसद सूप बनाया। बगुले ने लोमड़ी को एक लंबे और छोटे मुँह वाले बर्तन में सूप परोसा। लोमड़ी उस बर्तन से सूप नहीं पी पाई। मगर बगुला बड़े मजे से सूप पी गया। लोमड़ी को भूखे ही घर वापस जाना पड़ा।

शिक्षा : जैसी करनी वैसी भरनी।



२. बीमार शेर

जंगल का राजा शेर बूढ़ा हो गया था। एक दिन शेर एक पेड़ के नीचे बैठकर रोते हुए बोला, “मैं बहुत बीमार हूँ।” यह बात तीन गिलहरियों ने सुन ली। उन्होंने यह बात दूसरे जानवरों को बताई। यह सुनकर दूसरे जानवरों को शेर पर दया आ गई। उन्हें लगा शेर सचमुच बीमार है। पर शेर बीमार होने का नाटक कर रहा था। दूसरे दिन से सभी जानवरों ने शेर को खाना देना शुरू कर दिया।



पर शेर बहुत चालाक था। जो भी जानवर शेर को खाना देने जाता, शेर उसे खा जाता। एक दिन लोमड़ी शेर के लिए खाना लेकर गई। लोमड़ी ने शेर की गुफा के बाहर बहुत सारी हड्डियाँ देखी। लोमड़ी समझ गई कि शेर जानवरों का शिकार कर रहा है। वह वहाँ से भाग गई। लोमड़ी ने यह बात सारे जानवरों को बताई। सभी जानवरों ने शेर को खाना देना बंद कर दिया।

शिक्षा : हमें सोच-समझकर दूसरों की मदद करनी चाहिए।



३. बारहसिंगा

जंगल में एक बारहसिंगा रहता था। उसे अपने सींग बहुत अच्छे लगते थे। पर उसे अपने पतले पैर बिल्कुल पंसद नहीं थे। एक दिन बारहसिंगा नदी के पानी में अपने सींगों को देख खुश हो रहा था। तभी उसने जंगली कुत्तों के भोंकने की आवाज सुनी। अपनी जान बचाने वह बहुत तेज दौड़ा।



दौड़ते-दौड़ते उसके सींग एक पेड़ की टहनी में बुरी तरह फँस गए। उसने बहुत मुश्किल से अपने सींगों को छुड़ाया और वहाँ से भागा। उसके पतले पैरों ने उसकी जान बचाई। उस दिन से बारहसिंगा को अपने पैरों से बहुत प्यार हो गया।

शिक्षा : किसी भी वस्तु के गुणों को देखो सुंदरता को नहीं।



४. दो बकरियाँ

एक गाँव के बीच से एक नदी बहती थी। उस नदी पर एक छोटा-सा लकड़ी का पुल था। एक दिन दो बकरियाँ उस पुल के दोनों तरफ से एक साथ चढ़ी और नदी पार करने लगी। पुल के बीचों बीच आमने-सामने आकर दोनों रुक गईं।

एक बकरी बोली “मैं पहले जाऊँगी।” दूसरी बकरी बोली, “नहीं, मैं पहले जाऊँगी।” दोनों मैं-मैं करके लड़ने लगी। दोनों बकरियाँ लड़ते-लड़ते नदी में गिर गईं और बहुत दूर तक बह गईं।

शिक्षा : हमें समझदारी से काम लेना चाहिए।

